परागणकर्ता कम हो रहे हैं

एक अध्ययन बताता है कि पेड़-पौधों की परागण की क्रिया में गिरावट आ रही है। अलबत्ता, यह स्पष्ट नहीं है कि ऐसा क्यों हो रहा है। गौरतलब है कि परागण वह क्रिया है जिसमें फूलों के पराग कण किसी अन्य फूल या उसी फूल के स्त्रीकेसर तक पहुंचते हैं। इसी क्रिया के बाद निषेचन होता है और फल व बीज बनते हैं। इसका मतलब है कि परागण में गिरावट आने से उपज पर भी असर पड़ेगा।

कनाडा के टोरोन्टो विश्वविद्यालय के जेम्स थॉमसन 1993 से ही येलो एवलांश लिली का अध्ययन करते रहे हैं। यह लिली कोलेरैडो के रॉकी पर्वत पर पाई जाती है। इनका मुख्य परागणकर्ता बंबलबी है। थॉमसन हर साल कुछ पौधों का परागण अपने हाथों से करते हैं ताकि उनमें फल अवश्य लगें। फिर वे इन पौधों की तुलना उन पौधों से करते हैं जो परागण के लिए प्राकृतिक युक्तियों के भरोसे हैं।

फिलॉसॉफिकल ट्रांज़ेक्शन ऑफ दी रॉयल सोसायटी में प्रकाशित शोध पत्र में थॉमसन ने बताया है कि शुरुआत में तो दोनों तरह के पौधों का प्रदर्शन एक-सा रहा यानी कृत्रिम व प्राकृतिक परागण वाले पौधों में बराबर फल लगे। मगर 1999 के बाद से देखा गया कि गैर-मददशुदा पौधों का प्रदर्शन लगातार घटिया रहा। इसका मतलब यह है कि उन्हें पर्याप्त मात्रा में पराग कण नहीं मिल पा रहे हैं।

पहले भी कई अध्ययनों में पता चला है कि परागणकर्ताओं की संख्या में कमी आ रही है मगर थॉमसन के अध्ययन में पहली बार यह बात उजागर हुई है कि इसके कारण पौधों की प्रजनन क्षमता प्रभावित हो रही है। थॉमसन ने जिस जगह पर अध्ययन किया है, वह स्थान अभी भी काफी अछूता है। वहां स्थानीय मधुमक्खियों की संख्या में कोई गिरावट नहीं देखी गई है और न ही जलवायु परिवर्तन ने स्थानीय मौसम पर कोई खास असर डाला है। लिहाज़ा पौधों में परागण क्रिया में कमी आना एक पहेली बनी हुई है। ***(स्रोत फीचर्स)***